शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी-मार्च 2026

'कसप' उपन्यास में प्रेम के बहुआयामी द्वंद्व

कविता कोठारी
सोबन सिंह जीना परिसर
अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

शोध संक्षेप

प्रेम समाज के अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण आधार है क्योंकि इसके माध्यम से विभिन्न सामाजिक और पारिवारिक संबंधों में आत्मीयता, विश्वास और भावनात्मक संतुलन का विकास होता है। किंतु जब यही प्रेम मर्यादा, कर्तव्य और सामाजिक मूल्यों की उपेक्षा करने लगता है तब वह द्वंद्व का रूप धारण कर लेता है। मनोहर श्याम जोशी के 'कसप' उपन्यास में प्रेम के इसी द्वंद्वात्मक स्वरुप को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के पात्र प्रेम और मोह में इतने अधिक उलझ जाते हैं कि वे सही-गलत का विवेक खो बैठते हैं। परिणामस्वरूप प्रेम उनके लिए सृजन का नहीं बल्कि विघटन का कारण बन जाता है। वह स्थापित सामाजिक मर्यादाओं और पारंपरिक संबंधों के संतुलन को बिगाड़ देता है, जिससे अस्वीकृति, संघर्ष और असंतुलन उत्पन्न होता है। प्रेमी और प्रेमिका के संबंध में निरंतर विकास के साथ-साथ संघर्ष भी दिखाई देता है। प्रारंभ में उनका प्रेम अनेक कठिनाइयों से गुजरता है किंतु उन संघर्षों को पार करने के साथ-साथ उनके भावनात्मक संबंध और गहरे होते जाते हैं। परंतु अंततः नायक अपनी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं में इस कदर उलझ जाता है कि वह नायिका की भावनाओं और सुझावों को समझने में असमर्थ हो जाता है। यही स्थिति उनके संबंधों में दूरी पैदा करती है और अंततः नायिका उसे छोड़कर अपने जीवन में आगे बढ़ने का निर्णय लेती है। इस प्रकार 'कसप' में प्रेम एक बहुआयामी अनुभव के रूप में सामने आता है जिसमें आकर्षण, संघर्ष, समर्पण, निकटता और वियोग सभी साथ उपस्थित हैं।

मुख्य शब्द- *प्रेम और सामाजिक द्वंद्व, आत्मसम्मान, वर्गभेद और प्रतिष्ठा, महत्वाकांक्षा, संबंधों का असंतुलन*

प्रस्तावना

प्रेम मनुष्य की सबसे पवित्र, निश्छल, व्यापक और गहन भावना है। यह केवल स्त्री-पुरुष के आकर्षण तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें अपनत्व, त्याग, समर्पण और निस्वार्थ भाव निहित रहता है। जीवन में प्रेम अनेक रूपों में विद्यमान रहकर संबंधों को स्नेह की डोर में बाँधता है और उन्हें सही दिशा प्रदान करता है। प्रेम की अनुभूति देशभक्ति, माता-पिता और संतान के बीच के स्नेह, भाई-बहन के आत्मीय संबंधों, मित्रता तथा प्रेमी युगलों के मधुर संबंधों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। प्रेम ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है तथा आपसी संबंधों को प्रगाढ़ और सार्थक बनाता है।

'कसप उपन्यास में प्रेम के बहुआयामी द्वंद्व

'कसप' उपन्यास में प्रेम के विभिन्न रूपों का संवेदनशील चित्रण देखने को मिलता है। इसमें प्रेम किसी आदर्शवादी कल्पना के रूप में नहीं, बल्कि यथार्थ जीवन के द्वंद्वों के साथ प्रदर्शित किया गया है। उपन्यास में एक ओर प्रेम का आकर्षण और अपनापन उभरकर सामने आता है तो दूसरी ओर आधुनिकता और प्रगति की अंधी दौड़ में प्रेम से दूर हो जाने की विवशता भी स्पष्ट होती है। लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि जब मनुष्य भौतिक उन्नति के मोह में पड़ जाता है, तब उसके संबंधों

में भावनात्मक दूरी उत्पन्न हो जाती है और वे संबंध टूटकर बिखरने लगते हैं। इसके बावजूद उपन्यास में प्रेम को एक ऐसे आभूषण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर द्वंद्व का शिकार होने पर भी जीवन को गरिमा और सौंदर्य प्रदान करता है।

सच्चा प्रेम स्वार्थ, लालसा, अधिकार और कुछ प्राप्त करने की इच्छा से स्वतंत्र स्वयं को समर्पित करने की भावना से जन्म लेता है। प्रेम का वास्तविक और निश्छल स्वरूप दूसरों को दुःख, पीड़ा या कष्ट देने के स्थान पर उसे सुख देने की भावना पर जोर देता है। इसलिए प्रेम त्याग और सहनशीलता की पराकाष्ठा है। ऐसा प्रेम मानव मूल्यों को सुदृढ़ बनाकर समाज में मानवीय संवेदनाओं को सशक्त बनाता है। इसके साथ ही मनुष्य प्रेम के वशीभूत होकर तर्क, तुलना, अहंकार, आत्मग्लानि, गुण, दोष और स्वार्थ से भरी चिर-शंकालु बुद्धि से प्रेरित 'मैं' की भावना का त्याग करता है। इस अवस्था में उसे अपने अस्तित्व का भी बोध नहीं रहता और वह सहज और निश्छल जीवन जीने लगता है, क्योंकि वह सभी सीमाओं से मुक्त होता है। इसलिए उसे समाज के दायरों में बाँधना कठिन होता है। इस कारण उसके लिए सामान्य व्यक्ति को विविधताओं में बाँटने वाले जाति, रंग, धर्म, भाषा, देश या सामाजिक हैसियत जैसे बंधन अर्थहीन हो जाते हैं। लेखक के अनुसार प्रेम को अतिवादी कहा गया है जो प्रेम की प्रकृति को सहज और उग्र दोनों रूपों में संदर्भित करता है, क्योंकि परिपक्व व्यक्ति जीवन के व्यावहारिक पक्ष को समझने लगता है, जिससे प्रेम समझौते में बदल जाता है।

"प्रेम होता ही अतिवादी है। यह बात प्रौढ़ होकर ही समझ में आती है उसके कि विधाता अमूमन इतना अतिवाद पसंद करता नहीं। खैर सयाना-समझदार होकर प्यार, प्यार कहाँ रह पाता है!"[1]

प्रेम मनुष्य के गुणों को विकसित और सुदृढ़ करने में योगदान देता है। यह स्वयं में पूर्ण होता है तथा संवेदनशीलता, विश्वास और समझ का संतुलित अनुभव है। सच्चा प्रेम किसी को बदलने या अपने अनुरूप ढालने का प्रयास नहीं करता। वह व्यक्ति को उसकी सीमाओं और कमजोरियों सहित स्वीकार करता है। प्रेम में अधिकार की अपेक्षा विश्वास और सम्मान का स्थान अधिक होता है। जब व्यक्ति को इस प्रकार की स्वीकृति मिलती है, तब उसके भीतर आत्मस्वीकृति और आत्मसम्मान की भावना प्रबल होती है।

"मुझे किसी के लायक नहीं बनना। अपने लायक ही बन जाऊं बहुत होगा। तू किसी के लायक क्यों बनना चाहता ? तेरे भीतर सभी गुन ठहरे।"[2]

इस प्रसंग में प्रेम का आत्मसम्मान से जुड़ा स्वरूप प्रकट होता है। नायक नायिका के प्रेम के लिए स्वयं में बदलाव के लिए भी तत्पर दिखता है, किंतु नायिका प्रेम को सहज और स्वाभाविक मानती है। वह प्रेम को आत्मकेंद्रित और आत्मसम्मान से पूर्ण मानती है। उसके लिए प्रेम किसी के योग्य बनने की प्रतिस्पर्धा नहीं है बल्कि स्वयं के योग्य बनना ही सच्चा प्रेम है। प्रेम के लिए एक-दूसरे के काबिल बनना अनिवार्य नही होता क्योंकि लाभ-हानि की दृष्टि से कदम बढ़ाने के लिए काबिलियत देखी जाती है। इस दृष्टि से नायिका आत्मनिर्भर, सजग और परिपक्व है। उसके लिए प्रेम बाहरी मान्यता पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति को कम करता है और व्यक्ति को अपने भीतर निहित मूल्य को पहचानने की प्रेरणा देता है। किंतु यही प्रेम जब सामाजिक संरचना से टकराता है, तब असंतुलन पैदा होता है। भारतीय समाज में प्रेम और समाज के बीच द्वंद्व आम है। समाज के संचालन के लिए कुछ नियम और परंपराएँ होती हैं, जो

E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी-मार्च 2026

व्यक्ति इन सामाजिक नियमों और मर्यादाओं का उल्लंघन करता है अथवा अनुचित आचरण करता है, उसे समाज आदर्शहीन तथा असंयमी व्यक्ति के रूप में देखता है, जो जातिगत भेदभाव और आर्थिक भेदभाव को बढ़ाता है। ऐसी घटनाएँ ही वर्ग संघर्ष का कारण बनती है क्योंकि प्रेम समाजिक और पारिवारिक मर्यादाओं से स्वतंत्र होता है, उनके लिए इन मर्यादाओं का कोई महत्व नहीं होता है। इसके अतिरिक्त, कई व्यक्ति वैभव और सामाजिक प्रतिष्ठा के मोह में प्रेम को महत्व नहीं देते हैं। वे प्रेम को संवेदनात्मक बंधन के रुप में नहीं, बल्कि उसे सांसारिक सुख-सुविधाओं की कसौटी में परखते हैं।

"इन्हें मुझ अभागे डी. डी. की प्रतिष्ठा का दिन-भर राम-नाम-सत्य करने में कोई हिचक नहीं होगी। बेबी ने मुझे उकसाया लेकिन बेबी के विषय में ये अधिक कुछ नहीं कहेंगे। बेबी शास्त्री जी की बेटी है, कर्नल साहब की बहन है। इन लोगों का बड़ा-सा घर है इस नगर में। ऊँचा खानदान है। ये भीतरी लोग हैं। मैं बाहरी हूँ, क्योंकि मेरा कोई नहीं है।"3

यहाँ वर्ग भेद और सामाजिक प्रतिष्ठा प्रेम के मार्ग में बाधक के रूप में प्रदर्शित की गई है। डी.डी. स्वयं को 'बाहरी' मानता है, क्योंकि उसके पास वह पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं है जो बेबी के पास है। जिसमें हीनता और प्रेम के बीच संघर्ष दिखता है।

'कसप' उपन्यास में प्रेम और महत्वाकांक्षा का द्वंद भी दृष्टिगत होता है। जिसमें प्रेमी और प्रेमिका भी अपने कर्तव्य, स्वार्थ और प्रगति के मोह में प्रेम को महत्व नहीं देते है। नायक के लिए भविष्य की सफलता और सामाजिक प्रतिष्ठा प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण है, जबकि नायिका के लिए प्रेम वर्तमान की संवेदना है। वह नायक के अमेरिका जाने का विरोध करती है। इस संवाद में प्रेम का भावनात्मक पक्ष और जीवन का व्यावहारिक पक्ष परस्पर संघर्ष करते हैं।

"आखिर मैंने ऐसा क्या कर दिया है कि तू कोपभवन में जा बैठी है ? मैं अमेरिका जा रहा हूँ तीन-चार साल के लिए। लौटकर शादी कर लूंगा। अभी कर लेता पर लग्न नहीं है। रुक जाता, पर रुकने से वहाँ दाखिला रद्द हो जाएगा। यही हुई तेरी सयानों जैसी बात ? यही हुई तो बच्चों जैसी ही क्या। वह फिर हँसती है। इसमें हँसने की क्या बात है ? इसमें रोने की भी कोई बात नहीं है। तुम्हें मेरे अमेरिका जाने से क्या आपत्ति है ? समझ में नहीं आता। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। तुझे नहीं है इसी का थोड़ा ताज्जुब जैसा है। इसमें ताज्जुब होने की क्या बात है ? क्या तूने ही नहीं कहा, हममें से हरेक को अपने योग्य बनना चाहिये।"4 इस प्रकार भारतीय समाज में प्रेम केवल दो व्यक्तियों के बीच का मधुर संबंध नहीं होता बल्कि उसे परिवार की प्रतिष्ठा, सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं से जोड़ कर देखा जाता है। उपन्यास में प्रेम प्रारंभ में आकर्षण और आत्मीयता के कारण बढ़ता है, किंतु धीरे-धीरे महत्वाकांक्षा सामाजिक दबाव और आत्म गौरव से उसमें दूरी आ जाती है।

उद्देश्य

प्रेम समाज का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है, किंतु प्रत्येक समाज में प्रेम के साथ संघर्ष भी अनिवार्य रूप से उपस्थित रहता है। 'कसप' उपन्यास में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि प्रेम और संघर्ष के बीच सामंजस्य पूर्णतः स्थापित नहीं हो पाता, जिसके कारण पात्रों के जीवन में गहन द्वंद्व उत्पन्न होता है। इस शोध का उद्देश्य उपन्यास में प्रेम की पराकाष्ठा तथा उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक और मानसिक संघर्ष का सूक्ष्म एवं गहन विश्लेषण करना है। उपन्यास यह संकेत करता है कि प्रेम में अद्भुत

शक्ति निहित है। यदि वह सत्य और निष्ठा पर आधारित हो, तो वह सामाजिक ऊँच-नीच, भेदभाव और असमानताओं जैसी बाधाओं को चुनौती देने की क्षमता रखता है। साथ ही, यह शोध इस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि जब प्रेम सामाजिक संरचनाओं, प्रतिष्ठा, वर्गभेद और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से टकराता है,तब उसमें विघटन, दूरी और असंतुलन की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस प्रकार शोध का मुख्य उद्देश्य 'कसप' में प्रेम के विभिन्न रूपों, उसके आंतरिक मनोवैज्ञानिक संघर्षों तथा सामाजिक संदर्भों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है, ताकि यह स्थापित किया जा सके कि प्रेम केवल व्यक्तिगत अनुभूति नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ा हुआ बहुआयामी अनुभव है।

निष्कर्ष

लेखक ने 'कसप' उपन्यास में प्रेम के द्वंद्व को अत्यंत संवेदनशील और प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। उपन्यास में नायिका को दो स्तरों पर प्रेम-संघर्ष का सामना करना पड़ता है। प्रथम, पारिवारिक स्तर पर, जहाँ भाई और पिता उसके प्रेम को स्वीकार नहीं करते है। द्वितीय, व्यक्तिगत स्तर पर, जहाँ नायक अपनी महत्वाकांक्षा और प्रगति को प्राथमिकता देते हुए नायिका के साथ तत्काल विवाह का प्रस्ताव ठुकरा देता है। इस प्रकार प्रेम पारिवारिक अस्वीकृति और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के बीच फँसकर द्वंद्व का रूप ले लेता है। प्रेम केवल आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, त्याग और आंतरिक दृढ़ता की परीक्षा है। इसलिए प्रेम में समर्पण के साथ स्वत्वबोध भी आवश्यक है। प्रेम वह अद्भुत शक्ति है जो कठोर हृदय को भी कोमल बना सकती है। ईश्वर भी प्रेम के प्यासे होते हैं। भगवान श्रीराम शबरी के प्रेम से प्रभावित होकर उसके प्रेमपूर्वक अर्पित बेर स्वीकार करते हैं वहाँ न जाति का भेद है न सामाजिक स्थिति का विचार। इसी प्रकार गजेन्द्र के पुकारने पर भगवान उसकी रक्षा के लिए तत्पर होते हैं। महाभारत में भी द्रौपदी संकट की घड़ी में अपने सखा कृष्ण को पुकारती है, तो वे उसकी रक्षा करते है। इन प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि सच्चा प्रेम समर्पण, विश्वास और आस्था पर आधारित होता है तथा वह असंभव को संभव बनाने की शक्ति रखता है। अतः 'कसप' में प्रेम को केवल व्यक्तिगत अनुभूति के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक संघर्षों से जूझती हुई शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। यह उपन्यास दर्शाता है कि प्रेम में जहाँ विघटन और पीड़ा की संभावना है, वहीं उसमें आत्मसम्मान, समर्पण और मानवता को दिशा देने की अद्भुत क्षमता भी निहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- *जोशी, मनोहर श्याम, चौथा संस्करण 2014, कसप, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाषमार्ग दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृ.सं.16*
- *जोशी, मनोहर श्याम, चौथा संस्करण 2014, कसप, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृ.सं. 95*
- *जोशी, मनोहर श्याम,चौथा संस्करण 2014, कसप, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृ.सं.130*
- *जोशी, मनोहर श्याम, चौथा संस्करण 2014, कसप, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृ.सं. 250*